प्रथम अध्याय

"अलका सरावगी : व्यक्ति एवं वाङ्मय"

प्रथम अध्याय

“अलका सरावगी : व्यक्ति एवं वाङ्मय”

विषय-प्रवेश :

किसी भी साहित्यकार के साहित्य को समझने के लिए उसका व्यक्ति एवं कृति परिचय सहायक सिद्‌ध होता है इसे स्वीकारना होगा। डॉ. सरोज मार्कण्डेय के शब्दों में - “किसी व्यक्ति की विशेषता, भिन्नता, विचित्रता उसके व्यक्तित्व में स्पष्ट होती है, अतएव व्यक्तित्व व्यक्ति के पूर्ण परिचय का प्रतीक है। व्यक्तित्व मात्र शारीरिक विशेषताओं का परिचायक नहीं अपितु व्यक्ति की समस्त विशेषताओं - मानसिक, सांस्कृतिक पूंजीभूत है।”[1] उक्त कथन से स्पष्ट होता है कि व्यक्ति का व्यक्तित्व अंतरंग से संबंधित तथा बाह्य विशेषताओं का परिचायक है।

1.1 व्यक्ति-परिचय :

अलका सरावगी का व्यक्तित्व अपने काल की सशक्त मिसाल है। कथा-साहित्य के क्षेत्र में अलका सरावगी का नाम उन लेखिकाओं में गिना जाता है जिनकी अपनी एक अलग पहचान है। डॉ. क्रांतिकुमार लिखते हैं - “अलका सरावगी उन कथा-लेखिकाओं में उल्लेखनीय हैं जिन्होंने गत सदी के अंतिम वर्षों में बड़े धमाके के साथ उपन्यास के प्रांगण में प्रवेश किया था। मैत्रेयी पुष्पा और चित्रा मुद्‌गल के साथ अलका सरावगी को समसामयिक उपन्यास लेखिकाओं की त्रयी में गिना जा सकता है।”[2] स्पष्ट है कि अलका सरावगी की समकालीन लेखिकाओं में अपनी एक अलग पहचान है। व्यक्ति निर्माण में उनके जीवनानुभव महत्त्वपूर्ण होते हैं। परिणामत: साहित्यकार की साहित्य कृतियों को समझने के लिए व्यक्ति-परिचय सहायक सिद्‌ध होता है। इसी उद्‌देश्यपूर्ति हेतु अलका सरावगी का व्यक्ति-परिचय यहाँ प्रस्तुत करना तर्कसंगत होगा। अत: उनका व्यक्ति-परिचय यहाँ संक्षिप्त रूप में प्रस्तुत है -

---

1. डॉ. सरोज मार्कण्डेय - निराला साहित्य में युगीन समस्याएँ, पृष्ठ - 12
2. डॉ. क्रांतिकुमार - Internet.www.webdunia.com.

1.1.1 जन्मतिथि तथा जन्मस्थान -

बीसवीं सदी के अंतिम दशक की अग्रणी उपन्यासकार अलका सरावगी का जन्म नवम्बर, 1960 को कलकत्ता में हुआ है। उनकी अपने जन्मस्थान के प्रति गहरी रूचि तथा आस्था रही है। इसी कारण उन्होंने अपनी रचना में कलकत्ते को ही अपना देश माना है। स्वयं लेखिका के शब्दों में - ''कलकत्ते में पैदाइश और परवरिश के कारण मैंने तो कलकत्ते को ही अपना देश माना था।''[1] कहना आवश्यक नहीं कि लेखिका को अपने जन्मस्थान के प्रति लगाव है।

1.1.2 माता-पिता -

अलका सरावगी जी की माँ का नाम शकुंतला देवी तथा पिता का नाम केशवप्रसाद है। अलका जी अपने माँ को 'ताई' कहती हैं जो पुरानी कविता की रसिक भी हैं। उससे प्रेरणा पाकर ही अलका जी ने मैथिलीशरण गुप्त और जयशंकर प्रसाद की कविताएँ पढ़ी थी। अलका जी की माँ छठी या सातवी कक्षा तक पढ़ी थी और उसके बाद ही तुरंत उनकी शादी हो गई थी। अलका जी को पिता से ही शुद्ध भाषा के संस्कार मिले थे। भाषा-संस्कार मानो अलका जी को पीढ़िगत ही मिले थे। कृपाशंकर चौबे का कहना है कि ''ताई हमेशा शुद्ध भाषा पर जोर देती। ताई के अलावा पिता केशवप्रसाद से भी उन्हें शुद्ध भाषा के संस्कार मिले, पिता की भाषापर अच्छी पकड़ थी। अलका ने पिछली पीढ़ी के मारवाड़ियों के पत्र, दादाओं के पत्र देखे तो ठगी रह गई - कितनी शुद्ध और समर्थ भाषा उसके पास थी।''[2] इससे स्पष्ट है कि अलका जी को भाषा-संस्कार पीढ़ीगत मिले थे जिसका प्रमाण उनका 'कलि-कथा : वाया बाइपास' उपन्यास भी है।

1.1.3 परिवार -

जिस प्रकार हर इन्सान को अपना परिवार प्रिय होता है उसी प्रकार अलका जी को भी अपना परिवार प्रिय है। उनका परिवार संयुक्त और सार्वजनिक रहा है। अपने परिवार के बारे में स्वयं अलका जी कहती है - ''एक घर-परिवार जिसमें विभा या ज्योति सिर्फ देवरानियां नहीं हैं, सहेलियां भी हैं, पठिकाएं भी हैं, उसमें महेश जी जैसे पति की चुप्पी,

---

1. सं. राजेंद्र यादव - हंस (जनवरी 1999), पृष्ठ - 127
2. कृपाशंकर चौबे - Internet.www.webdunia.com.

शालीनता, मयंक-सलोनी जैसे बेटे-बेटी सब उनके पाठक हैं, उनके संस्कारों से उपजा आत्मानुशासन है। चिड़ियों को बिना देखे आवाज से वे पहचान लेती हैं। फिर आप उनका ब्यौरा, रंग, रूप, बैठने की जगह सब सुन या जान सकते हैं।''[1] कहना आवश्यक नहीं कि अलका सरावगी का परिवार संपन्न और आदर्श है।

अलका जी के दादी का नाम कमला है। सास सीतादेवी ने अलका जी के पढ़ाई में बखूबी योगदान किया है। साथ ही उनके परिवार ने भी उनकी पढ़ाई में योगदान किया है। अलका जी का उनके परिवार के साथ गहरा और आत्मीय लगाव रहा है। ठीक इसी स्थिति का जिक्र करते हुए डॉ. मंजुरानी सिंह लिखती हैं - ''धीरे-धीरे उसके संपूर्ण परिवार से ही परिचय हुआ। सबसे बड़ी बहू होने के नाते एक संयुक्त परिवार में अलका के बड़े दायित्व थे। सास, श्वसुर, दो देवर, दो देवरानियां और उनके बच्चे थे परिवार में। मुझे यह बहुत ही अच्छा लगता कि हर सदस्य के साथ अलका का बड़ा ही गहरा और आत्मीय संबंध था। उसके पति महेश जी, जो स्वयं भी बड़े प्रेमपूर्ण और शालीन व्यक्ति हैं, ने बड़ा भाई होने के कारण यदि संपूर्ण परिवार की उन्नति और सुख को अपना जीवन-मूल्य माना तो अलका ने भी इसकी रक्षा की। रोज-रोज अपने भीतर बुद्धि, प्रेम, त्याग और उदारता का विकास किया जो इसके लिए जरूरी था। सारे बच्चे उसे मां ही कहते, मानते, सभी उसका सान्निध्य पाने, उसकी गोद में बैठने के लिए मारामारी करते। वैसे यह भी उल्लेखनीय है कि उस घर में प्रत्येक बच्चे की मानों तीन माएं हैं। अलका और उसकी देवरानियों के बीच बड़ा गहरा अपनापा है। बच्चों के लिए तो एक-दूसरे की पर्याय हैं वे। ऐसे परिवार के सामने एकल परिवार की अवधारणा में ढेर सारे दोष नजर आते हैं। खैर इन सब बातों का यह अर्थ बिल्कुल ही नहीं है कि परिवार में कभी कोई संघर्ष, कोई तनाव नहीं होता था - बहस या झड़प का वातावरण नहीं बनता था। वैचारिक मुद्दों पर यह सब भी खूब घटता था।''[2] स्पष्ट है कि अलका जी का परिवार संपन्न परिवार है। उनके परिवार में बहस होती है लेकिन वह वैचारिक मुद्दों को लेकर होती है। अलका जी के प्रति परिवार के सभी बच्चों तथा देवरानियों का गहरा लगाव है। उनका परिवार के हर सदस्य के प्रति गहरा और आत्मीय संबंध है। अपने पति जैसा प्रेमपूर्ण और शालीन

---

1. सं. रवींद्र कालिया - वागर्थ, जुलाई 2004, पृष्ठ - 55
2. वही, पृष्ठ - 65

व्यवहार करनेवाली अलका संपूर्ण परिवार के लिए उन्नति और सुख जैसे जीवनमूल्यों की कामना करती है। अत: कहना आवश्यक नहीं कि अलका जी के संयुक्त परिवार के सामने एकल परिवार की अवधारणा में ढेर सारे दोष नजर आते हैं।

1.1.4 **बचपन** -

अलका जी का बचपन संपन्न परिवार में बीता। लेकिन पढ़ाई के लिए बचपन में ही काफ़ी कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। उनकी बचपन की स्थिति को चित्रित करते हुए कृपाशंकर चौबे लिखते हैं - "बचपन में अलका को शिकायत थी कि ये पढ़ाई-लिखाई क्या काम आएगी? अपनी दोनों बड़ी बहनों को देखती तो लगता जीवन का ढ़र्रा तो तय है।"[1] स्पष्ट है कि अलका जी को बचपन में ही पढ़ाई के लिए विरोध था। साधन-संपन्नता ही आदमी के सारे सुखों का स्रोत नहीं होता। अलका जी का बचपन ठीक इसी स्थिति से गुजरा हुआ नजर आता है। डॉ. मंजुरानी सिंह के शब्दों में - "मैंने बचपन से आर्थिक तंगी के कारण उपजती आदमी की ढ़ेर सारी समस्याओं को जाना था पर संपन्नता भी सारी समस्याओं का हल या सारे सुखों का स्रोत नहीं है, यह अनुभव भी अलका के कारण हुआ।"[2] अत: कहना होगा कि अलका जी का बचपन संपन्न परिवार में बीता है लेकिन सारे सुख-चैन उन्हें नहीं मिले हैं।

1.1.5 **शिक्षा** -

अलका जी पढ़ाई में आरंभ से तेज रही है। वह पहली कक्षा से कॉलेज तक प्रथम आती रही है। लेकिन अलका सरावगी के परिवार में पढ़ाई लिखाई की पृष्ठभूमि न के बराबर थी। अपनी वास्तविकता बताते हुए स्वयं लेखिका कहती हैं - "मेरी मां छठी या सातवी तक पढ़ी होगी। उसके बाद उसकी शादी हो गई होगी। मैं ग्रेजुएट थी, लेकिन शादी के पहले मुझे उसके आगे बिलकुल पढ़ने नहीं दिया गया, क्योंकि अगर मैं पढ़ती तो मेरे लिए लड़का खोजना मुश्किल होता। यह हमारी रियालिटी थी।"[3] स्पष्ट है कि अलका जी को अपने पढ़ाई के लिए विरोध होने के बावजूद भी उन्होंने कठिनाइयों या बाधाओं से संघर्ष करते हुए अपनी पढ़ाई पूरी की। उन्होंने आठवीं कक्षा में ही प्रेमचंद के 'मानसरोवर' के आठों खण्ड पढ़े थे। स्नातक की शिक्षा में हिंदी विषय न होने कारण भी कई कठिनाइयों का सामना करना पड़ा।

---

1. कृपाशंकर चौबे - Internet.www.webdunia.com.
2. सं. रवींद्र कालिया - वागर्थ, जुलाई, 2004, पृष्ठ - 65
3. सं. राजेंद्र यादव - हंस, जनवरी, 1999, पृष्ठ - 129

उससे मार्ग निकलने पर उन्होंने लोरेटो कॉलेज से बी.ए. की उपाधि हासिल की। वैसे देखा जाए तो उन्होंने हिंदी साहित्य बहुत कम पढ़ा है और उनकी पढ़ाई में बहुत सारे गैप्स भी हैं। स्वयं अलका जी के शब्दों में - ''मैंने हिंदी साहित्य ही बहुत कम पढ़ा है। हालांकि मैंने हिंदी साहित्य में एम्.ए. किया, लेकिन मेरे बहुत सारे गैप्स हैं।''[1] अलका जी को पढ़ाई छोड़कर आठ-नौ साल हो गए थे; बावजूद इसके उन्होंने दिन-रात पढ़ाई कर सन् 1990 में कोलकाता विश्वविद्यालय से हिंदी विषय लेकर प्रथम श्रेणी में एम्.ए. की उपाधि प्राप्त की। एम्.ए. के बाद अलका जी ने डॉ. शंभुनाथ जी के निर्देशन में रघुवीर सहाय पर एम्.फिल. किया। उन्हें विश्वविद्यालय अनुदान आयोग की ओर से (व्याख्याता के लिए अर्हताप्राप्त) छात्रवृत्ति भी मिली थी। एम्.फिल. की उपाधि मिलने के बाद उन्होंने सन् 1996 में आलोचक - प्राध्यापक डॉ. शंभुनाथ के निर्देशन में रघुवीर सहाय जी पर पीएच्.डी. की उपाधि भी हासिल की। इस संदर्भ में परमानंद श्रीवास्तव का कहना है - ''शंभुनाथन के निर्देशन में अलका ने एम्.फिल., पीएच्.डी. की है।''[2] पत्रकारिता समाज की विषमता से जूझने का हाथियार समझकर उन्होंने पत्रकारिता में डिप्लोमा कोर्स भी किया है। अत: कहना आवश्यक नहीं कि अलका सरावगी संघर्ष एवं कठिनाइयों का सामना कर एम्.फिल. तथा पीएच्.डी. उपाधि विभूषित मेधावी छात्रा है। उन्होंने अनेक बाधाओं तथा पढ़ाई के लिए परिवार के विरोध के बावजूद भी उच्च शिक्षा प्राप्त कर हिंदी साहित्य में अपना नाम रोशन किया है इसमें संदेह नहीं।

1.1.6 नौकरी -

अलका जी ने 'बालकोश' में काम किया है। साथ ही उन्होंने 'नवभारत टाइम्स' के आठवें कॉलम के लिए पत्रकारीय लेखन का दायित्व भी निभाया है। उसके बाद उन्होंने कॉलेज में प्राध्यापक होने की चेष्टा की थी, परंतु विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के बनाए पैमाने पर वह योग्य सिद्ध नहीं हुई जिसके कारण उन्हें नौकरी नहीं मिली।

1.1.7 विवाह -

अलका सरावगी का विवाह बीस साल की आयु में हुआ। स्नातक की शिक्षा के बाद कोलकाता के प्रतिष्ठित व्यावसायी महेश सरावगी से अलका जी की शादी हो गई।

1. सं. राजेंद्र यादव - हंस, जनवरी, 1999, पृष्ठ - 129
2. सं. रवींद्र कालिया - वागर्थ, जुलाई, 2004, पृष्ठ - 54

कृपाशंकर चौबे के मतानुसार - "अलका जब बीस साल की हुई तो कोलकाता के प्रतिष्ठित व्यावसायी महेश सरावगी से शादी हुई।"[1] बी.ए. के बाद उन्हें पढ़ने नहीं दिया क्योंकि ज्यादा पढ़ने पर उनके लिए लड़का ढूँढना एक दिक्कत हो जाती। अत: स्पष्ट है कि मारवाडी समाज में शिक्षा के बारे में जो पुरानी धारणाएँ प्रचलित थी उन्हें अलका सरावगी ने तोड़ा है।

1.1.8 संतान -

लेखिका अलका सरावगी की कुल दो संताने हैं - एक बेटा और एक बेटी। याने वह खुशनसीब (लेखिका) औरत है लेकिन दु:ख की बात यह है कि उनकी पहली संतान शारीरिक रूप से अक्षम है। उसे सामान्य बनाने के लिए वह हर तरह के संघर्ष से जूझती रही। डॉ. मंजुरानी सिंह के शब्दों में - "उसकी पहली संतान शारीरिक रूप से अक्षम हो गई थी। कई वर्षों के इलाज के बावजूद कोई सफलता हासिल नहीं हुई। फिर भी उसे हर तरह से सामान्य बनाने का उसका संघर्ष जारी था - है भी। उसकी समुचित शिक्षा-दीक्षा की घर में पूरी व्यवस्था है। किसी स्वस्थ माँ-बाप की यह एक अकथ्य-अमिट वेदना है। अलका वर्षों तक इस वेदना से जूझती रही थी।"[2] अलका जी अपने बेटा तथा बेटी को लेकर प्रथम आने की जिद नहीं करती क्योंकि "एम्.ए. के दौरान दिन-रात एक कर पढ़ाई की ताकि प्रथम आ सकूँ। हालांकि अपने बेटे या बेटी के लिए मैं कतई नहीं चाहूंगी कि वे कक्षा में प्रथम आएं क्योंकि यह वृत्ति घातक है। यह झूठी प्रतिस्पर्धा को जन्म देती है, कई दिलों को दुखाती है।"[3] उक्त कथन से स्पष्ट है कि लेखिका अलका जी अपने बेटा-बेटी से प्रथम आने की उम्मीद नहीं करती।

1.1.9 मित्र-परिवार -

अलका सरावगी का मित्र परिवार बड़ा है। अलका की अध्यापिका डॉ. मंजुरानी सिंह और उनके मैत्रीपूर्ण संबंध है। परमानंद श्रीवास्तव उनके मित्रतापूर्ण व्यवहार के बारे में लिखते हैं - "याद आता है कि अलका ने कभी किसी पत्र में पूंजीवाद के कलावाद में संक्रमण को आनेवाले दिनों का एक बड़ा खतरा बताया था। याद यह भी आता है कि इसी गोमती के कमरा नंबर एक में जब अलका को उसी शाम साहित्य अकादमी पुरस्कार मिलनेवाला था - अलका ने फ्लाइट से अकादमी को रिपोर्ट करने के तुरंत बाद अपनी सहेली ज्योति गुप्ता

---

1. कृपाशंकर चौबे - Internet.www.webdunia.com.
2. सं. रवींद्र कालिया - वागर्थ, जुलाई, 2004, पृष्ठ - 66
3. कृपाशंकर चौबे - Internet.www.webdunia.com.

के माध्यम से पॉश एरिया से डॉक्टर बुलाकर मेरी जान बचायी थी। उन्हें खुद अगले दिन आत्मवक्तव्य पढ़कर कोलकाता लौट जाना था। पर भूल नहीं सकता कि किस तरह अलका और ज्योति ने मेरा सामान्य और एक मित्र के साथ बसंद बिहार या बसंत इन्क्लेव भेज दिया। शरीर में पानी और नमक के क्षय के कारण मैं जैसे डूब रहा था - सिंक करने की-सी स्थिति थी।''[1] स्पष्ट है कि अलका सरावगी मित्रतापूर्ण व्यवहार करनेवाली है। उनके डॉ. मंजुरानी सिंह तथा ज्योति गुप्ता से स्नेहपूर्वक संबंध हैं।

1.1.10 **पत्रकार -**

अलका सरावगी लेखिका के साथ-साथ पत्रकार के रूप में भी चर्चित हैं। वे रिपोर्ताज तथा टिप्पणियां भी लिखती हैं। पत्रकारिता समाज की विषमता से जूझने का हथियार समझकर उन्होंने पत्रकारिता डिप्लोमा कोर्स किया है। साथ ही वे 'नवभारत टाइम्स' के आठवें कॉलम में पत्रकारीय लेखन भी करती हैं। इसी संदर्भ में कृपाशंकर चौबे का कथन द्रष्टव्य है - ''रविवार और परिवर्तन में कई रिपोर्ताज व टिप्पणियां राजकिशोर ने छापीं। 'नवभारत टाइम्स' के आठवें कॉलम के लिए भी पत्रकारीय लेखन किया, तब अलका को लगता था कि समाज में जो विषमता है, उससे जूझने का हाथियार पत्रकारिता ही हो सकती है। पत्रकारीय लेखन के साथ-साथ अलका ने पत्रकारिता में डिप्लोमा कोर्स भी किया।''[2] स्पष्ट है कि अलका सरावगी पत्रकार की भूमिका में भी रही हैं।

1.1.11 **लेखन की प्रेरणा -**

हर व्यक्ति अच्छे-बूरे कार्य में किसी-न-किसी से प्रेरणा लेता ही है। अलका सरावगी को शुद्ध भाषा के संस्कार अपने माता-पिता से पैतृक रूप में मिले थे लेकिन उसे प्रेरणा देने का काम अशोक सेकसरिया ने किया है। अलका जी की लेखन-प्रेरणा के बारे में कृपाशंकर चौबे लिखते हैं - ''बालकोश में उन्हें संयोग से काम मिला था। उसी समय एम्.ए. करने का भी विचार आया। अशोक सेकसरिया से परिचय हुआ जिन्होंने लेखन की ओर प्रेरित किया।''[3] कहना आवश्यक नहीं कि अलका जी को लेखन की प्रेरणा अशोक सेकसरिया से मिली है।

---

1. सं. रवींद्र कालिया - वागर्थ, जुलाई, 2004, पृष्ठ - 54-55
2. कृपाशंकर चौबे - Internet.www.webdunia.com.
3. वही

1.1.12 संप्रति -

अलका सरावगी ने अनुसंधान कार्य पूरा किया है और उनकी शादी भी हो गई है। अब वह अपने बेटा-बेटी तथा पति के साथ आदर्श गृहिणी के रूप में तथा लेखिका के रूप में कोलकाता में अपना जीवन बीता रही है। स्पष्ट है कि वह एक अनुसंधाता, लेखक तथा आदर्श गृहिणी का दायित्व कोलकाता में निभा रही है।

1.2 व्यक्तित्व की विशेषताएँ :

1.2.1 मेधावी छात्रा -

अलका सरावगी जी को बचपन से पढ़ाई में रूचि रही है। वह अपनी पढ़ाई अनेक कठिनाइयों तथा बाधाओं के बावजूद भी पूरी करती रही। अलका जी पहली कक्षा से कॉलेज तक प्रथम श्रेणी में आती रही है। आपने एम्.ए. की उपाधि भी प्रथम श्रेणी में प्राप्त की है। डॉ. मंजुरानी सिंह कहती है कि ''अलका अत्यंत मेहनती थी। उसकी बुद्धि प्रखर और चित्त व्यवस्थित था। उसने बहुत ही एकाग्र चित्त और लक्ष्यबद्ध होकर एम्.ए. की तैयारी की। उसका उसे सुफल भी मिला। वह प्रथम श्रेणी में प्रथम स्थान लेकर पास हुई। मेरे देखे यह सफलता उसकी नयी जिंदगी की पहली सीढ़ी थी। फिर तो बाधाएं और प्रयत्न एक साथ चलते रहे।''[1] स्पष्ट है कि अलका जी बाधाएं और प्रयत्न को साथ लेकर अपनी ध्येयप्राप्ति करनेवाली है। अत: वह मेधावी छात्रा है।

1.2.2 प्रकृति-प्रेमी -

अलका सरावगी को प्रकृति के प्रति गहरा लगाव एवं आस्था दिखाई देती है। वह प्रकृति से चेतना लेकर प्रभावित भी होती है। स्वयं लेखिका के शब्दों में - ''मेरा प्रकृति से बहुत लगाव रहा है। एक समय ऐसा था कि मैं पेड़ों को देखती और मुझे चिड़िया दिखने लगती थी। ऐसी मेरी कुछ कहानियों में प्रकट हुआ भी। लेखक की चेतना जिन चीजों से प्रभावित होती है वे लेखन में भी चली आती है।''[2] स्पष्ट है कि लेखिका अलका जी को लेखन की प्रेरणा भी प्रकृति से मिलती है और प्रकृति से वह प्रभावित भी होती है।

---

1. सं. रवींद्र कालिया - वागर्थ, जुलाई, 2004, पृष्ठ - 66
2. वही, पृष्ठ - 60

कई लोग प्रकृति-प्रेमी होते हैं। वे फूल, पेड़ और चिड़िया को अपनी दुनियां मानते हैं। डॉ. मंजुरानी सिंह का कथन विचारणीय है - ''वह नए सिरे से प्रकृति के साथ संलग्न होने लगी थी। फूल, पेड़ और चिड़िया की दुनिया होती, ये उसे ज्यादा ही लुभाती, आल्हादित करती - भौतिक आवश्यकताएं उसकी बहुत ही कम थी।''[1] कहना सही होगा कि अलका सरावगी प्रकृति-प्रेमी है। वह प्रकृति से लुभाती भी है और अल्हादित भी होती है।

1.2.3 **प्रतिभाशाली** -

अलका सरावगी प्रतिभाशाली है, इस बात का पता उसके साहित्य सृजन से ही चलता है। अलका जी में प्रतिभा के साथ-साथ गहन इच्छाशक्ति और लगन भी। डॉ. मंजुरानी सिंह के शब्दों में - ''यदि प्रतिभा के साथ गहन इच्छाशक्ति और लगन हो तो व्यक्ति के भीतर छुपी सारी संभावनाएं खुल-खिल उठती हैं। अलका मेरे लिए ऐसा ही एक उदाहरण है।''[2] कहना आवश्यक नहीं कि डॉ. मंजुरानी सिंह का उदाहरण अलका जी की प्रतिभाशाली व्यक्तित्व का परिचायक है।

1.2.4 **संवेदनशील** -

अलका जी का व्यक्तित्व संवेदनशील है उसका प्रमाण उनकी रचना में भी मिलता है। अनय अलका की रचना संवेदना के बारे में लिखते हैं - ''अलका सरावगी की रचनाओं में संवेदना की गहराइ है।''[3] उन्होंने अपनी रचना में नारी-संवेदना को भी अंकित किया है। उनकी संवेदनशील तथा बुद्धिमान व्यक्तित्व के बारे में डॉ. मंजुरानी सिंह कहती हैं - ''अलका को मैंने अत्यंत ही संवेदनशील, बुद्धिमानी और निष्कपट स्त्री के रूप में जाना।''[4] स्पष्ट है कि अलका सरावगी का व्यक्तित्व संवेदनशील है। अत: कहना आवश्यक नहीं कि अलका सरावगी के व्यक्तित्व में संवेदनशीलता, आंतरिकता और आत्मीयता के कई पहलू परिलक्षित होते हैं।

1.2.5 **शालीन तथा अहंकारहीन** -

सरावगी जी का व्यक्तित्व अभिजात्य में लिपटा जरूर है परंतु शालीनता और अहंकारहीनता उनमें स्पष्ट झलकती है। इसी संदर्भ में डॉ. मंजुरानी सिंह का कथन द्रष्टव्य है -

---

1. सं. रवींद्र कालिया - वागर्थ, जुलाई, 2004, पृष्ठ - 66
2. वही, पृष्ठ - 66
3. वही, पृष्ठ - 84
4. वही, पृष्ठ - 65

''मारवाडी परिवार में शिक्षकों के प्रति कोई प्रेम, श्रद्धा और शिक्षा के प्रति किसी उच्च लक्ष्य का संस्कार ही नहीं होता - कालेज में पढ़ाते हुए सामान्य तौर पर मेरा यही अनुभव पुख्ता हुआ था। पर बातचीत के दौरात अलका बड़ी शालीन लगी मुझे। उसका व्यक्तित्व अभिजात्य में लिपटा जरूर था पर छल-छद्म, कृत्रिमता, आडंबर, अहंकार आदि का कोई लेश नहीं था उनमें।''[1] उक्त कथन से समझने में देर नहीं लगती कि अलका जी का व्यक्तित्व अहंकारहीन तथा शालीन है।

1.2.6 अध्ययनशील -

सरावगी जी का व्यक्तित्व निरंतर संघर्ष के बावजूद भी निरंतर अध्ययनशील रहा है। वह बचपन से ही अध्ययनशील दिखाई देती है। वह जब आठवीं कक्षा में थी तब ही उन्होंने प्रेमचंद के 'मानसरोवर' के आठों खण्ड पढ़े थे। उनकी पढ़ाई की गहरी रूचि के बारे में कृपाशंकर चौबे लिखते हैं - ''शादी के बाद शुरुआती साढ़े चार वर्षों में ससुराल में अलका को कुछ परेशानी हुई। वैसे पढ़ने के प्रति, लिखित शब्दों के प्रति आकर्षण इतना ज्यादा था कि जो कुछ मिलता भले ही ठोंगा हो वे पढ़ने लगती। उपलब्ध किताब भी पढ़ती। पढ़ने से सास सीतादेवी ने कभी मना नहीं किया, बल्कि इसकी कद्र करती थी।''[2] स्पष्ट है कि अलका जी का व्यक्तित्व अध्ययनशील है।

1.2.7 ईश्वर के प्रति आस्थावान -

अलका सरावगी को ईश्वर के प्रति आस्था है। वह ईश्वर के अस्तित्व को माननेवाली लेखिका है। स्वयं लेखिका के शब्दों में - ''मेरे अपने संस्कारों में कलियुग त्रेता आदि भी एक है - एक अल्प ईश्वर। अस्तित्व। प्रकृति भी - जिससे मैं घबराहट में प्रार्थना कर सकती हूँ।''[3] स्पष्ट है कि अलका जी ईश्वर के प्रति आस्था रखनेवाली है।

1.2.8 गांधीवादी विचारों से प्रभावित :-

अलका सरावगी के व्यक्तित्व पर गांधीवादी विचारधारा का प्रभाव दिखाई देता है। इसका प्रमाण 'कलि-कथा : वाया बाइपास' है। प्रस्तुत उपन्यास का अमोलक

---

1. सं. रवींद्र कालिया - वागर्थ, जुलाई, 2004, पृष्ठ - 65
2. कृपाशंकर चौबे - Internet.www.webdunia.com.
3. सं. रवींद्र कालिया - वागर्थ, जुलाई, 2004, पृष्ठ - 53

नामक पात्र है, जो गांधीवादी विचारों से प्रभावित है। बाबरी मस्जिद ध्वंस में अमोलक की मृत्यु होने के बावजूद भी उपन्यास के अंत में उसे जीवित दिखाया है। लेखिका इस रचना में अमोलक के माध्यम से गांधीवादी विचारधारा को ही जीवित दिखाना चाहती है। गांधी जी की मृत्यु तो हुई लेकिन उनके विचारों की मृत्यु नहीं हुई। अत: स्पष्ट है कि लेखिका अलका सरावगी गांधीवादी विचारधारा से प्रभावित है।

1.2.9 रचनाओं के प्रति निष्ठावान -

अलका सरावगी उन लेखिकाओं में से हैं जो अपनी रच्नाओं के प्रति निष्ठावान है। यही कारण है कि वह अपनी रचनाओं के बारे में सफल एवं संतुष्ट दिखाई देती है। फलत: उनका गौरव हो गया है। इसी संदर्भ में डॉ. मंजुरानी सिंह लिखती हैं - ''आरंभिक रचनाएं वह सबसे पहले जिन चंद अपने लोगों को सुनाती उनमें मैं भी होती। अपनी रचनाधर्मिता के प्रति वह आरंभ से ही निष्ठावान और सक्रिय रही। इसका गौरवपूर्ण परिणाम निकला। उससे जुड़ा ऐसा हर परिणाम मुझे समान रूप से आल्हादित और गौरवान्वित करता है।''[1] कहना आवश्यक नहीं कि लेखिका अलका जी अपने रचनाओं के प्रति निष्ठावान है।

1.2.10 हिंदी, अंग्रेजी रचनाओं का प्रभाव -

लेखिका सरावगी जी पर अनेक हिंदी तथा अंग्रेजी साहित्यकारों की रचनाओं का प्रभाव है। वे हिंदी के विनोदकुमार शुक्ल के 'नौकर के कमीज' तथा 'दीवार में एक खिड़की रहती थी', रघुवीर सहाय तथा अंग्रेजी के टालस्टाय, चेखव एवं वी.एस. नेपॉल आदि रचनाकारों की विभिन्न रचनाओं से प्रभावित रही हैं। इसी संदर्भ में स्वयं लेखिका कहती हैं - ''मैं अपना सबसे प्रिय लेखक कह सकूं वो है विनोदकुमार शुक्ल जिनका अभी 'दीवार में एक खिड़की रहती थी' आया है। इससे पहले 'नौकर की कमीज़' ने भी मुझे बहुत प्रभावित किया। मैंने बहुत कुछ छिटपुट ही पढ़ा है। विधिवत रूप से मेरी अंग्रेजी की भी पढ़ाई नहीं है। वैसे वी.एस. नेपॉल को मैंने बहुत पढ़ा। अपना उपन्यास पूरा करने के बाद भी उनका 'हाउस ऑफ मिस्टर विश्वास' पढ़ा है। टालस्टाय, चेखव आदि रूसी लेखकों को मैंने काफी पढ़ा है और उससे बहुत प्रभावित भी हुई। रघुवीर सहाय तो मेरे प्रिय लेखक हैं ही।''[2] उक्त उद्धरण से

---

1. सं. रवींद्र कालिया - वागर्थ, जुलाई, 2004, पृष्ठ - 66
2. सं. राजेंद्र यादव - हंस, जनवरी, 1999, पृष्ठ - 129

समझने में देर नहीं लगती कि अलका जी पर हिंदी तथा अंग्रेजी रचनाकारों की रचनाओं का प्रभाव है और उनके प्रिय लेखक रघुवीर सहाय जी है।

1.2.11 समकालीन लेखकों में अलग पहचान -

समकालीन लेखकों में अलका सरावगी जी ने अपनी रचनाओं के जरिए अलग पहचान बनाई है। यह पहचान उन्होंने अंधेरे की चमक जैसी ही हासिल की है। स्वयं लेखिका के शब्दों में - ''मुझे यह कहने में संकोच नहीं है कि किसी दूसरे नये या समकालीन लेखक से रचना-प्रक्रिया को लेकर किए गए तर्क-वितर्क में मैंने इतना कुछ अंधेरे की चमक जैसे हासिल किया है, जितना 'सेलिब्रिटी' हो चुकी अलका से। यह न अतिकथन है, न गर्वोक्ति, न अतिरिक्त प्रशंसा। कहना न होगा कि औपचारिक प्रशंसाएं केवल क्षणिक होती हैं, बल्कि बंजर, अर्थहीन।''[1] स्पष्ट है कि अलका सरावगी की समकालीन लेखिकाओं में अलग पहचान हैं।

1.2.12 संघर्षशील व्यक्तित्व -

सरावगी जी ने बचपन से ही पढ़ाई के लिए संघर्ष किया है। वह प्रतिकूल परिस्थिति में अपनी पढ़ाई पूरी करती हैं। डॉ. मंजुरानी सिंह का कहना है - ''आगे पढ़ने की उसमें सच्ची चाहत जगी थी पर परिस्थिति प्रतिकूल थी। वह नियमित विश्वविद्यालय जाकर पढ़ाई करे, परिवार में ऐसी छूट नहीं थी। ऐसे में उसने मध्य मार्ग खोजा था। परिस्थितियों की बाधाएं तोड़ती तो थीं पर बिना चटखाए हुए, जैसे टूटन की आवाज़ जोर से न हो।''[2] कहना आवश्यक नहीं कि अलका जी ने पढ़ाई के लिए परिस्थिति तथा बाधाओं को तोड़कर संघर्ष कर अपनी पढ़ाई पूरी की है। साथ ही वह अपने शारीरिक रूप से अक्षम बेटे के लिए अनेक वर्षों तक वेदना से जूझती रही है, संघर्षरत रही है। अंततः कहना होगा कि अलका जी का व्यक्तित्व संघर्षशील है।

1.2.13 नौकरी के क्षेत्र में असफल -

अलका जी नौकरी के क्षेत्र में असफल रही है। विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के बनाए गए पैमाने पर वह योग्य न सिद्ध होने के कारण उन्हें नौकरी के क्षेत्र में

1. सं. रवींद्र कालिया - वागर्थ, जुलाई, 2004, पृष्ठ - 54
2. वही, पृष्ठ - 65

असफलता का सामना करना पड़ा। डॉ. मंजुरानी सिंह लिखती हैं कि "उसके संदर्भ में यह एक दुखद स्मृति है कि उसने कालेज में प्राध्यापक होने की चेष्टा की पर विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के बनाए पैमाने पर वह योग्य सिद्ध नहीं हुई। इससे अलका को तत्कालिक निराशा हुई पर मैं उसे उसका दुर्भाग्य नहीं बल्कि शिक्षा जगत् का दुर्भाग्य मानती हूँ।"[1] उक्त कथन से विदित होता है कि अलका सरावगी नौकरी क्षेत्र में असफल रही है।

1.2.14 सृजन-प्रक्रिया -

सृजन-प्रक्रिया के बारे में अलका सरावगी का दृष्टिकोण विचारणीय लगता है। उनका मानना है कि लेखन के क्षेत्र में अग्रसर तो होना है, नए-नए विषयों के साथ प्रस्तुत भी होना चाहती हूँ लेकिन वह आसान बात नहीं है। कच्चे लेखन के आधार पर पुन: वह यह अपेक्षा भी रखती है कि पूर्वाभ्यास की कुछ सहायता अपने नए लेखन में होगी लेकिन ऐसा नहीं होता बल्कि लेखन की स्थितियाँ और भी कठिन होती जाती है। कहना सही होगा अलका सरावगी अनुभव की पूँजी होने के बावजूद भी लेखन के क्षेत्र में नए सिरे से सोचती है; विचार करती है और अपना लेखन का मार्ग प्रशस्त करती है। स्वयं अलका सरावगी का कहना है - "अब आगे बढ़ना चाहती हूँ। पीछे जो मिला उसे भूल कर। फिर एक नये सिरे से जीवन की शुरुआत। और लिखना तो हमेशा पहले की बनिस्बत कठिन ही होता जाता है। कोई पूर्वाभ्यास काम नहीं आता। ऐसा सिर्फ लिखने के काम में होता होगा।"[2] स्पष्ट है कि अलका सरावगी का सृजन संबंधी दृष्टिकोण अथक परिश्रम एवं अनुभूति की प्रक्रिया से युक्त नजर आता है। स्वयं लेखिका अलका सरावगी की मान्यता है - "लेखन ही एक मात्र ऐसी कला है जिसमें आदमी हर बार पहले से कच्चा होता जाता है। मंजने की बजाय। कम से कम अधिक प्रवीण तो नहीं होता।"[3]

1.2.15 नारी-मुक्ति की आकांक्षा -

अलका सरावगी नारी-मुक्ति की आकांक्षा रखती है। उन्होंने अपने उपन्यासों में नारी की पीड़ा, दर्द, व्यथा तथा दयनीय स्थिति को चित्रित कर नारी-मुक्ति की आकांक्षा की है। 'कोई बात नहीं' उपन्यास की दादी का यह कथन द्रष्टव्य है - "मैं और बाहर? कहाँ बेटा?

---

1. सं. रवींद्र कालिया - वागर्थ, जुलाई, 2004, पृष्ठ - 66
2. वही, पृष्ठ - 55
3. वही, पृष्ठ - 53

घर के हर कमरे की चार दीवारें थीं। उनमें दरवाजे भी थे। लेकिन जब कभी मुझे दरवाजे से बाहर जाना होता तो देहरी ऊँची होने लगती और दरवाजों को बंद कर देती। महीने-महीने भर वे देहरियाँ ऊँची रहतीं और मैं घर के अंदर बंद रहती। फिर क्या करती? यह झाड़ो। वह पोंछो। यह चुगो। वह बिनो। यह धो। वह सुखाओ। दर्जनों की दर्जनों रोटियाँ पोओ।''[1] दादी के कथन से स्पष्ट है कि लेखिका अलका सरावगी नारी के नारकीय जीवन को त्यागकर नारी-मुक्ति की आकांक्षा रखती है।

1.2.16 **सामाजिक दायित्व वहन -**

सरावगी जी अपनी रचनाओं के माध्यम से सामाजिक दायित्व को वहन करती है। वह अपनी रचनाओं में समाज का खुले आम चित्रण करती है। उनके रचना पात्र अनेक वर्गों का प्रतिनिधित्व करते हैं। सामाजिक सरोकारों का उन्होंने अपनी रचनाओं में निर्वाह किया है। इसी संदर्भ में अनय लिखते हैं - ''अलका सरावगी की रचनाओं में किसी प्रकार का पूर्वाग्रह नहीं है। वे खुले समाज का चित्रण करके अपनी रचनाओं का अंत भी खुलेपन में करती हैं। इनकी व्याख्याएं अनेकार्थी हो सकती हैं। अलका सरावगी की रचनाओं में संवेदना की गहराई व्यापक है। उनके रचना पात्र समाज के कई-कई वर्गों का प्रतिनिधित्व करते हैं। व्यापक सामाजिक सरोकारों को अपनी रचना के कर्म में रखना और उनका निर्वाह कर लेना आपकी विशेषता है।''[2] स्पष्ट है कि अलका सरावगी ने अपनी रचनाओं के माध्यम से सामाजिक दायित्व का वहन सक्षमता के साथ किया है।

1.2.17 **अत्यधिक व्यस्तता -**

लेखिका अलका सरावगी हमेशा व्यस्त रहनेवाली लेखिका है। उनके व्यक्तित्व को जानने के पश्चात् पता चलता है कि वह काफी व्यस्तता में रहनेवाली लेखिका है। यह मेरा निजी अनुभव भी रहा है कि लेखिका अलका सरावगी घर-गृहस्थी तथा लेखन-कार्य के कारण काफी व्यस्त होने के कारण वह मेरी जिज्ञासाओं को संतुष्ट नहीं कर पाई। अत: कहना गलत नहीं होगा कि लेखिका अलका सरावगी नया सृजन करनेवाली तथा हमेशा व्यस्तता में रहनेवाली लेखिका है।

---

1. अलका सरावगी - कोई बात नहीं, पृष्ठ - 57
2. सं. रवींद्र कालिया - वागर्थ, जुलाई, 2004, पृष्ठ - 84

सामाजिक दायित्व का वहन करनेवाली अलका जी का व्यक्तिगत जीवन साधारण और सार्वजनिक रहा है। स्वयं लेखिका के शब्दों में - "मेरा जीवन साधारण और सार्वजनिक रहा है। मैं संयुक्त परिवार में रही हूँ।"[1] स्पष्ट है कि अलका का व्यक्तिगत जीवन साधारण तथा सार्वजनिक रहा है। साथ ही उनका व्यक्तित्व संवेदनशील, आंतरिक और आत्मीय भी रहा है। उनके व्यक्तित्व के संबंध में डॉ. मंजुरानी सिंह लिखती हैं - "अलका के व्यक्तित्व की संवेदनशीलता, आंतरिकता और आत्मीयता के और कई पहलू हैं..... अलका सरावगी का व्यक्तित्व मेरे शिक्षण कर्म के संदर्भ में एक ऐसा उदाहरण है जो मुझे हमेशा किसी छटपटाती प्रतिभा और प्रस्तरों में दबी संभावनाओं की शापमुक्ति के लिए प्रयत्नशील होने को प्रेरित करता है।"[2] स्पष्ट है कि अलका सरावगी जी का व्यक्तित्व प्रतिभाशाली तथा प्रेरणा देनेवाला है इसमें संदेह नहीं।

1.3 वाङ्मय परिचय अर्थात् अलका सरावगी की साहित्य-यात्रा :

किसी रचनाकार के व्यक्तित्व की सही पहचान उसके कृतित्व के द्वारा ही होती है क्योंकि उसके समस्त जीवन का लेखा-जोखा उसके कृतित्व में ही उभरकर सामने आता है। अलका सरावगी जी ने परंपरावादी उपन्यास के ढ़ाँचे को तोड़कर उपन्यास संसार में अपनी एक अलग पहचान बनाई है। श्रेष्ठ हिंदी समीक्षक डॉ. नामवर सिंह का मानना है - "स्थापत्य (architecture) सौ साल बाद बदलता है - अलका ने उपन्यास का स्थापत्य बदल दिया है।"[3] कहना सही होगा कि लेखिका ने साहित्य-संसार जगत् में साहित्य लेखन की परंपरा को तोड़कर एक नई जमीन अपने साहित्य के माध्यम से तलाशी तथा तराशी है। वही अलका सरावगी का रचना संसार माना जाता है -

1.3.1 उपन्यास साहित्य -

कलि-कथा : वाया बाइपास	- आधार प्रकाशन	प्र.सं. 1998
शेष कादम्बरी	- राजकमल प्रकाशन	प्र.सं. 2001 2
कोई बात नहीं	- राजकमल प्रकाशन	प्र.सं. 2004

---

1. सं. राजेंद्र यादव - हंस, जनवरी, 1999, पृष्ठ - 128
2. सं. रवींद्र कालिया - वागर्थ, जुलाई, 2004, पृष्ठ - 66
3. वही, पृष्ठ - 54

अलका सरावगी ने ऊपर निर्देशित तीन उपन्यास लिखे हैं। उनका संक्षेप में विवेचन-विश्लेषण यहाँ प्रस्तुत है -

1 - **कलि-कथा : वाया बाइपास :-**

उपन्यास प्रकाशन क्रम की दृष्टि से 'कलि-कथा : वाया बाइपास' अलका जी का पहला और बहुचर्चित उपन्यास है। प्रस्तुत उपन्यास का प्रकाशन आधार प्रकाशन दूवारा सन् 1998 में हुआ है। प्रस्तुत उपन्यास के केंद्र में एक मारवाड़ी परिवार का प्रतिनिधि पात्र किशोर बाबू है। प्रस्तुत उपन्यास में आज़ादी के काल के चित्रण के साथ-साथ आज़ादी के पूर्ववर्ती और परवर्ती काल के समाज का चित्रण प्रस्तुत किया है। छह पीढ़ियों की कथा किशोर बाबू के जीवन की तीन अवस्थाओं के माध्यम से प्रस्तुत की है। स्वातंत्र्यपूर्व और स्वातंत्र्योत्तर काल के भारत की सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, ऐतिहासिक तथा राष्ट्रीय परिवेश को यथार्थता से अंकित किया है। प्रस्तुत उपन्यास के जरिए लेखिका ने जीवन में आई हुई हर समस्या को सुलझाने के लिए बाइपास का रास्ता अपनाने का संदेश दिया है। प्रस्तुत उपन्यास का विवेचन-विश्लेषण तृतीय अध्याय में विस्तार से हो रहा है। अत: यहाँ विस्तार तथा पुनरूक्ति से बचना समीचीन होगा ।

2 - **'शेष कादंबरी' :-**

प्रकाशन क्रम की दृष्टि से 'शेष कादंबरी' अलका सरावगी का दूसरा उपन्यास है। 'शेष कादंबरी' उपन्यास का प्रकाशन सन् 2001 में राजकमल प्रकाशन से हुआ है। उपन्यास केंद्र में मारवाड़ी समाज की धनी महिला रूबी दी है। लेखिका ने रूबी दी के माध्यम से नारी की पीड़ा, दर्द, शोषण, अन्याय-अत्याचार तथा अभावग्रस्तता को अंकित किया है। प्रस्तुत उपन्यास में लेखिका भारतीय समाज की पुरानी तथा रूढ़ि ग्रस्तता को अपनानेवाली रूबी दी और नए समाज का प्रतिनिधित्व करनेवाली नातीन कादंबरी को आमने-सामने रखकर पुरानी और नई पीढ़ी का अंतर स्पष्ट किया है। प्रस्तुत उपन्यास में उपेक्षिता स्त्रियों को न्याय दिलाना, वेश्याओं को अपना अधिकार दिलाना, स्त्रियों में आत्मविश्वास जगाना, अकेलापन तथा आत्महत्या जैसी भयावह समस्या को दूर रखना, अपने अस्तित्व की पहचान करा देना,

पुरूषों की स्त्रियों को देह समझने की मानसिकता में परिवर्तन लाना तथा नारी को समानाधिकार देना आदि बातों का चित्रण मिलता है। अंत में भारतीय नारी की उदारता को भी चित्रित किया है। प्रस्तुत रचना का विवेचन-विश्लेषण तृतीय अध्याय में विस्तार से हो रहा है। अत: यहाँ विस्तार तथा पुनरूक्ति से बचना सही होगा।

3 - **'कोई बात नहीं' :-**

औपन्यासिक रचनाक्रम की दृष्टि से अलका सरावगी का यह तीसरा उपन्यास है। प्रस्तुत उपन्यास का प्रकाशन सन् 2004 में राजकमल प्रकाशन से हुआ है। 'कोई बात नहीं' उपन्यास शारीरिक रूप से अक्षम बेटा शशांक तथा उसकी माँ दोनों के सुख-दु:ख के साझेदारी की कथा है। प्रस्तुत उपन्यास के माध्यम से लेखिका ने स्पष्ट किया है कि मनुष्य के जीवन में आती कठिनाइयों तथा समस्याओं के बावजूद भी हिम्मत नहीं हारनी चाहिए, इस उपन्यास का विवेचन-विश्लेषण तृतीय अध्याय में विस्तार से हो रहा है। अत: यहाँ पुनरूक्ति से बचना समीचीन होगा।

1.3.2 **कहानी-संग्रह -**

अलका सरावगी ने दो कहानी-संग्रह लिखे हैं - 'कहानी की तलाश में' और 'दूसरी कहानी'। उनका विवेचन-विश्लेषण यहाँ प्रस्तुत है -

1 - **'कहानी की तलाश में' :-**

'कहानी की तलाश में' प्रकाशन क्रम की दृष्टि से अलका सरावगी का पहला कहानी संग्रह है। प्रस्तुत कहानी-संग्रह का प्रकाशन राजकमल प्रकाशन द्वारा सन् 1996 में हुआ है। इस कहानी-संग्रह में कुल मिलाकर सत्रह कहानियाँ संकलित हैं जिनके शीर्षक निम्नांकित हैं - 'कहानी की तलाश में', 'हर शै बदलती है', 'बीज', 'मिसेज डिसूजा के नाम', 'टिफिन', 'बहुत दूर है', 'आसमान', 'एक व्रत की कथा', 'प्रतीक्षा के बाद', 'सम्भ्रम', 'ख़िजाब', 'महँगी किताब', 'जोड़-घटाव', 'पिस्सू और कलमघिस्सू', 'उद्विग्नता का दिन', 'मौत का एक दिन मुअय्यन है...', 'लालमिट्टी की सड़क' और 'आपकी हँसी' आदि। उपर्युक्त कहानियों के विषय भी विभिन्न हैं जो निम्नांकित हैं -

'कहानी की तलाश में' कहानी-संग्रह की पहली और प्रतिनिधि कहानी है। इस कहानी के केंद्र में एक आदमी है जो एक लड़की से बात करना चाहता है परंतु वह लड़की उस आदमी से बात करने लायक इसलिए नहीं समझती कि उसके पास कोई कहानी नहीं है। अत: प्रस्तुत कहानी वह लड़की है जो कहानी की तलाश में है। 'हर शै बदलती है' कहानी में लेखिका जीवन को नए सिरे से जीने की इच्छा रखती है क्योंकि वह जानती है कि हर मनुष्य में जिजीविषा है, जो सारे कष्टों के बावजूद भी आदमी को आत्महत्या से बचाए रखती है। अत: जिजीविषा इस कहानी का परममूल्य है। 'बीज' कहानी के केंद्र में एक बीमार नारी है जिसे अपनी चचेरी बहन का पागलपन और दादी तथा मौसी के बीमारी की स्थिति याद आती है जिसके कारण उसे लगता है कि यह बीमारी के बीज बचपन से ही उसके अंदर है। वह इसी मानसिकता में गॅलरी में आती है और बाहर जाती गाड़ियों को देखती है तब वह सोचती है कि दुनिया चल रही है, मैं सिर्फ क्यों रूक गई हूँ? इसी विचार से तरोताजा हो जाती है।

'मिसेज डिसूजा के नाम' पत्रात्मक शैली में लिखी इस कहानी की माँ और अपनी बेटी वंदिता प्रधानाध्यापिका को पत्र में वो सारी बातें कहती है जो प्रत्यक्ष मुलाकात में नहीं कह सकती थी। प्रस्तुत कहानी की सुस्मिता गुप्ता अपना जीवन अपनी बेटी के साथ सहजता से जीना चाहती है, लेकिन आज का समाज उसे वैसा नहीं जीने देता। 'टिफिन' कहानी में सारिका नामक ग्यारहवीं पढ़नेवाली लड़की अपने दादी को स्कूल में घटी हर घटना बताती है। इस कहानी में सारिका और उसकी सहपाठी विद्‌या जो कभी टिफिन नहीं लाती थी, उन दोनों सहेलियों के अंतद्‌र्वंद्‌व का चित्रण है। 'बहुत दूर है आसमान' कहानी में अपनी बेटी के भविष्य के प्रति माता-पिता चिंतित हैं क्योंकि आज का समाज नारी को बचपन से स्वच्छंद विचरण करने नहीं देता। इसी विचार और सोच की चिंता को लेकर प्रस्तुत कहानी लिखी गई है।

'एक व्रत की कथा' इस कहानी के माध्यम से बछवारस व्रत जैसे पुरानी परंपरा के संदर्भों से लेखिका ने नारी-मुक्ति तथा नारी अधिकार की माँग की है। बढ़ती आधुनिकता के कारण मानव की मानवीयता का होता ह्रास 'प्रतीक्षा के बाद...' कहानी में

दिखाई देता है। डॉक्टर के पास आए मरीज और उनकी मानसिकता का सजीव अंकन इस कहानी में मिलता है। 'सम्भ्रम' कहानी की नायिका अपनी माँ तथा कनक मौसी के व्यक्तित्व के खालीपन को लेकर संभ्रमित है। 'ख़िजाब' कहानी में दमयंती नामक एक आत्मकेंद्रित नारी है जो प्रेम, स्वतंत्रता तथा अपनी अस्मिता की खोज में है। 'महँगी किताब' कहानी में प्रभावशाली स्त्री सुशिला जी के संपर्क में आई हुई एक लड़की है। कथानायक सोचता है कि अगर वह लड़की सुशिला जी को मानेगी तो वह बोनसाई के पौधे के समान हो जाएगी। तब वह अपने आप से शर्त भी लगाता है कि अगर वह लड़की जीत गई तो वह महँगी किताब खरीदेगा और अगर वह हार गई तो वह महँगी किताब नहीं खरीदेगा। अत: वह लड़की एक दिन अपने अस्तित्व या वजूद के लिए सुशिला जी से झगड़ती है। अगले दिन वह लड़की नायक से मिलने आती है तब कथानायक सोचता है कि उसे वह महँगी किताब खरीदनी पड़ेगी।

'जोड़-घटाव' कहानी की प्रोफेसर सुधा, कॉलेज में होनेवाले सुबोध जी और मोहन जी जैसे प्रोफेसरों के विचारों को सुनकर उस पर विचार-चिंतन करती है। 'पिस्सू और कलमघिस्सू' की नायिका अरूणा वर्तमान समाज की व्यवस्था पर विचित्र ढंग से सोचती है। साथ ही यह कहानी भाषण शैली में लिखी गई है जिसमें वर्मा जी भाषा-संस्कृति और साहित्य पर अपने विचार व्यक्त करते हैं। 'उद्‌विग्नता का एक दिन' कहानी के केंद्र में 'मैं' है जो एक अँगुठी पहने आदमी को देखकर अपने चाचा तथा उनके परिवार को याद करती है।

'मौत का एक दिन मुअय्यन है, नींद क्यों रात भर नहीं आती' कहानी का नायक 'मैं' एक लड़की को तेज-तेज कदमों से चलते देखकर उसके आत्महत्या की कल्पना करता है और फिर अपने जीवन के बारे में सोचता है। इसमें वह अपनी पत्नी की तुलना उस लड़की से करता है फिर बैठे-बैठे रिश्तों के ताने-बाने उधेड़कर देखता जाता है। अपनी बहन के स्वभाव के बारे में सोचता है। इस प्रकार प्रत्येक आदमी के विचित्र जीवन पर अपने विचार व्यक्त करता है। 'लाल मिट्‌टी की सड़क' कहानी में वंदना नामक नारी अपनी अस्मिता की तलाश में है। वह प्रोफेसर वर्मा के साथ एक दिन के लिए ही सही बाहर निकल कर अपने वजूद को समझना चाहती है और पति भी उसी का साथ देता है। कहना आवश्यक नहीं कि कहानी

में पति-पत्नी का आपसी संबंध खुलेपन को लेकर है। 'आपकी हँसी' कहानी आदमी और आदमी के बीच असमानता के कारण खोए हुए एक अस्तित्वहीन आदमी की अस्पष्ट पीड़ा के प्रति ऐसी जिज्ञासा है जो जीवन के बारे में सोचने के लिए विवश करती है।

अंत में कहना सही होगा कि 'कहानी की तलाश में' कहानी-संग्रह की कहानियाँ कथाहीन शैली में लिखी हैं। कहानियों के पात्र समाज के हर वर्ग का प्रतिनिधित्व करते हैं। संवाद कहीं छोटे तो कहीं बड़े हैं। इन कहानियों में कलकत्ता शहर का चित्रण मिलता है। भाषा-शैली के नए-नए प्रयोग दिखाई देते हैं। आत्मकथात्मक, किस्सागोई, भाषण और पत्रात्मक आदि शैलियों का प्रयोग भी प्रधानता से किया हुआ दिखाई देता है। प्रस्तुत कहानी -संग्रह में नारी की विवशता, अपमान, अकेलापन और आत्महत्या आदि भयावह स्थितियों का चित्रण किया है। साथ ही नारी का प्रेम, अस्मिता, स्वतंत्रता और आत्मविश्वास आदि की तलाश की है। मनुष्य की आत्मकेंद्रित वृत्ति, अहन्मयता, स्वार्थपरकता तथा असहिष्णुता को चित्रित कर मनुष्य की जिजीविषा को भी दिखाया है। अत: कहना आवश्यक नहीं कि प्रस्तुत कहानी-संग्रह में नारी का सजग व्यक्तित्व, अस्मिता की तलाश, मानसिक अंतरद्वंद्व, प्रकृति-चित्रण और इन्सान की जीवन के प्रति होनेवाली आस्था आदि को चित्रित किया है।

2 - **'दूसरी कहानी' :-**

'दूसरी कहानी' अलका सरावगी का प्रकाशन क्रम के अनुसार दूसरा और बहुचर्चित कहानी-संग्रह है। प्रस्तुत कहानी-संग्रह का प्रकाशन राजकमल प्रकाशन से सन् 2000 में हुआ। इस कहानी-संग्रह में कुल मिलाकर अठारह कहानियाँ संकलित हैं, जैसे - 'ये रहगुजर न होती', 'दूसरी कहानी', 'पार्टनर', 'एक पेड़ की मौत', 'अँधेरी खोह में', 'आक एगारसी', 'रिपन स्ट्रीटेर परवीन अख्तर', 'इन लोगों ने धावा बोल दिया है', 'दूसरे किले में औरत', 'कब्ज-हर', 'यह भी सही है वह भी सही है', 'वाइल्ड फ्लावर हॉल', 'मन्नत', 'एक और नमक हराम', 'न्यू ईयर्स ईव', 'कलम तंत्र की कथाएँ', 'निर्वाण' और 'कन्फेशन' आदि। इन कहानियों के विषय में वैविध्य नजर आता है।

प्रस्तुत कहानी-संग्रह की सभी कहानियाँ परिवार तथा परिवार में नारी की स्थिति, उनकी मानसिकता, उनकी सोच, उनका परिवार के प्रति दृष्टिकोण, मध्यवर्गीय परिवार के विचार तथा मन:स्थितियों का विद्रोह अंकित करती है। ये वे कहानियाँ हैं कि जो प्राकृतिक परिवेश से संबंध रखती हैं। इन कहानियों में पेड़-पौधे और पक्षियों की चहचहाट को यथास्थान रेखांकित किया है।

'दूसरी कहानी' इस कहानी-संग्रह की प्रतिनिधि कहानी है। प्रस्तुत कहानी में एक माँ और उसके विकलांग बेटे सुदर्शन के जीवन का बयान है। इस कहानी में बच्चों का भविष्य, उनकी जिजीविषा एवं आत्माभिमान आदि को चित्रित किया है। 'ये रहगुजर न होती' कहानी प्रस्तुत कहानी-संग्रह की पहली कहानी है। परिवार के वृद्ध का अकेलापन तथा बेटी से उसका संबंध और परिवार की चीजों के प्रति उसका मोह आदि को दिखाया है। 'पार्टनर' कहानी में एक लड़के में प्रेम के कारण हुआ बदलाव चित्रित है। 'एक पेड़ की मौत' कहानी के केंद्र में एक ऐसा व्यक्ति है जो लगातार नौकरियां बदलता है और अपनी स्मृति के प्रति रागात्मक लगाव रखता है।

'अँधेरी खोह में' कहानी में स्वतंत्र भारत के पीछड़ी हुई आदिवासी जाति के लोगों का जीवन-चित्रण प्रस्तुत है। साथ ही इसमें मनुष्य-जीवन का कड़ुवा यथार्थ भी चित्रित है। 'आक एगारसी' कहानी में एक व्यक्ति और उनके मित्र का लड़का सुमंत दोनों का संवाद प्रस्तुत है। सुमंत अपनी पीढ़ी से आनेवाले ग्यारहवीं पीढ़ी के मनुष्य के भविष्य की बात करता है। इस कहानी में उत्तर-आधुनिकता की प्रवृत्ति दिखाई देती है। 'रिपन स्ट्रीटेर परवीन अख्तर' कहानी में एक मुसलमान स्त्री के वजूद का चित्रण है। वह स्त्री अपने जीवन में जैसा बनना चाहती है वैसा नहीं बन सकती।

'इन लोगों ने धावा बोल दिया है' कहानी कलकत्ते शहर को केंद्र में रखकर लिखी है। इस कहानी के पात्र कलकत्ता शहर के इतिहास का संकेत देते हैं। जिसमें एक ओर लक्खी और कलकत्ते के भिखारी जैसे लोग हैं तो दूसरी ओर शीला जैसे मध्यवर्गीय लोग हैं जो इन भिखारियों पर 'ग्लोबलाइजैशन' के नाम पर लेख लिख रहे हैं। 'दूसरे किले की औरत' के

केंद्र में ड्रिम हाउस का विज्ञापन करनेवाली एक खूबसूरत औरत है जो अंत में उसकी फटी हुई बिवाइयां को दिखाकर 'क्रॅक क्रिम' का विज्ञापन करती है। 'कब्ज-हर' कहानी में मुख्य पात्र भवानी बाबू के माध्यम से दफ्तर में होनेवाली दैनंदिन जीवन संबंधी बातों का चित्रण मिलता है। 'यह भी सही है वह भी सही है' कहानी में आदर्शवाद और यथार्थवाद के द्वंद्व को दिखाया है। प्रस्तुत कहानी का प्रधान प्रसंग है कि बेटे को मरणासन्न पिता का इलाज करवाना चाहिए कि नहीं, जब कि यह तय है कि उनकी मृत्यु निश्चित है। 'वाइल्ड फ्लावर हॉल' कहानी में शिमला से दूर बनाए कॉटेज को किसी ने अपनी पत्नी की याद में 'वाइल्ड फ्लावर हॉल' नाम दे दिया है। यहाँ आनेवाले सैलानी वाइल्ड फ्लावर और हॉल की तलाश करते हैं जो वहाँ है ही नहीं। 'मन्नत' कहानी में कलकत्ता और दिल्ली इन दो शहरों का चित्रण मिलता है। इस कहानी में दो महीने पहले बाबरी मस्जिद टूटने पर जो कड़वाहट हमारे बीच आ गई थी वह धुल जाए जैसी कामना को केंद्र में रखकर लिखी है।

'एक और नमक हराम' किशोरवयीन रजनी की कहानी है। किशोरावस्था में जीवन के संदर्भों और घटनाओं के अर्थ बदल जाते हैं और वह इसी बीच सामंजस्य बिठा पाती है। साथ ही मध्यवर्गीय मानसिकता को इस कहानी में चित्रित किया है। 'न्यू ईयर्स ईव' कहानी में प्रबोधकुमार के पारिवारिक जीवन का चित्रण मिलता है जिसमें खानदानी पुरखों की बात को उठाया है। 'कलम - तंत्र की कथाएँ' कहानी नये शिल्प में लिखी है। 'पंचतंत्र' के लेखक विष्णु शर्मा ने अपने शिष्य को सुनाई गई आधुनिक कहानी है जिसमें मुख्य पात्र ललित द्वारा गुरू-शिष्य के संबंध को दिखाया है। जीवन का अकेलापन और अंतर्विरोधों का चित्रण 'निर्वाण और कन्फेशन' कहानी में दृष्टिगोचर होता है।

अंत में कहना सही होगा कि 'दूसरी कहानी' कहानी-संग्रह के पात्र पारिवारिक मूल्यों को आत्मसात कर कहीं न कहीं इन मूल्यों के बीच घुटन महसूस करते हैं। साथ ही मानवीय मूल्यों को मानने से इन्कार भी करते हैं। इन पात्रों में परिवार में रहते हुए मूल्यों को चुनौती देकर अपनी अस्मिता को बनाए रखने की कोशिश करते हैं। इन कहानियों में देशकाल की दृष्टि से कलकत्ता शहर मौजूद है। विविध शैलियों का प्रयोग इस कहानी-संग्रह में दिखाई

देता है। भाषा में आशय की गहनता, संकेतात्मकता, तार्किक विवेचना तथा उत्तर-आधुनिकता आदि प्रवृत्तियाँ दिखाई देती हैं। बनावटीपन के पर्तों को उजागर करना, अपनी अनुभूति से मनुष्य के अधूरेपन की पहचान करा देना तथा अधूरेपन को दूर कर जीवन जीने की प्रेरणा देना 'दूसरी कहानी' संग्रह का महत्त्वपूर्ण उद्देश्य रहा है।

1.3.3 अनूदित-साहित्य -

अलका सरावगी के 'कलि-कथा : वाया बाइपास' उपन्यास का मारिओला अफ्रीदी दूवारा इतावली भाषा में अनुवाद हुआ है। साथ ही फ्रेंच और जर्मन में अनुवाद हो रहा है। विभा मौर्य भी स्पैनिश और पुर्तगाली भाषा में अनुवाद कर रही है।

'शेष कादम्बरी' उपन्यास का मीनाक्षी मुखर्जी दूवारा बंगला भाषा में अनुवाद हुआ है।

1.4 पुरस्कार एवं सम्मान :

अलका सरावगी जी अनेक श्रेष्ठ लेखिकाओं में एक हैं। उनके श्रेष्ठ कृतियों को मिले पुरस्कार एवं मान-सम्मानों से उनके श्रेष्ठ व्यक्तित्व का परिचय अवश्य मिलता है। अब तक अलका सरावगी को निम्नांकित पुरस्कार एवं सम्मानों से सम्मानित किया है -

1 - श्रीकांत वर्मा पुरस्कार :-

सन् 1998 में अलका सरावगी के 'कलि-कथा : वाया बाइपास' उपन्यास को श्रीकांत वर्मा पुरस्कार से पुरस्कृत किया है।

2 - साहित्य अकादमी पुरस्कार :-

अलका सरावगी का बहुचर्चित उपन्यास 'कलि-कथा : वाया बाइपास' को सन् 2001 में 'साहित्य अकादमी पुरस्कार' से गौरवान्वित किया है।

3 - बिहारी पुरस्कार :-

अलका सरावगी को उनके उपन्यास 'शेष कादंबरी' के लिए वर्ष 2006 के 'बिहारी पुरस्कार' से नवाजा जाएगा। यह पुरस्कार राजस्थान के साहित्यकारों को उनकी हिंदी और राजस्थानी में प्रकाशित कृतियों के लिए दिया जाता है।

निष्कर्ष :

अलका सरावगी के व्यक्ति एवं कृति-परिचय का अध्ययन करने के उपरांत जो निष्कर्ष सामने आए हैं, वे इस प्रकार हैं -

1. अलका सरावगी का व्यक्तित्व मेधावी, प्रकृति-प्रेमी, प्रतिभाशाली, संवेदनशील, अध्ययनशील, शालीन तथा अहंकाररहित जैसे गुणों से युक्त नजर आता है। सामाजिक दायित्व का वहन करनेवाली अलका जी पर हिंदी तथा अंग्रेजी रचनाकारों के रचनाओं का प्रभाव दिखाई देता है। अलका सरावगी आदर्श पत्नी, आदर्श बहू, आदर्श माता के साथ-साथ पारिवारिक जिम्मेदारियों को निभानेवाली आदर्श लेखिका है। उनके परिवार में अपनापन, प्रेमपूर्ण संबंध, गहरे और आत्मीय संबंध, उन्नति और सुख जैसी जीवनमूल्यों की कामना दिखाई देती है, जिसके कारण उनके संयुक्त परिवार के सामने एकल परिवार की अवधारणा में ढेर सारे दोष नजर आते हैं।

2. अलका सरावगी जी संघर्षमयी स्थिति में अपनी पढ़ाई पूरी कर अपनी रचनाओं के माध्यम से नारी-मुक्ति की आकांक्षा रखती हैं। नौकरी क्षेत्र में असफल होनेवाली अलका अपनी सृजन-प्रक्रिया के जरिए समकालीन लेखकों में अपनी अलग पहचान रखती हैं। अलका सरावगी ने पारिवारिक दायित्व को निभाकर अपनी उच्च-शिक्षा हासिल की है। अलका जी अपनी रचनाओं के प्रति निष्ठावान रहकर पाठकों को सही दिशा-निर्देश का संकेत भी देती हैं और पाठकों को सोच-विचार एवं चिंतन-मनन करने के लिए बाध्य भी करती हैं।

3. ईश्वर के प्रति आस्था रखनेवाली अलका गांधीवादी विचारों से प्रभावित है। पत्रकारिता को समाज की विषमता से जूझने का हथियार समझकर उन्होंने पत्रकारिता क्षेत्र में भी अपनी कलम चलाई है। उन्होंने अपने कृतित्व के माध्यम से समाज की अनेक समस्याओं को चित्रित किया है और उन समस्याओं को सुलझाने के लिए 'बाइपास' का मार्ग अपनाने का उपाय भी बताया है।

4. अलका जी का जीवन, सृजन और चिंतन इन तीनों से गुजरते हुए यह परिलक्षित होता है कि बचपन से ही साहित्य के प्रति रूचि रखनेवाली अलका जी को अपने माता-पिता से भाषा-संस्कार मिले थे। अलका जी का साहित्य-सृजन उनके चिंतन-मनन के अनुरूप है। उनका चिंतन अधिक सच्चा, कालसापेक्ष और विचारधाराओं से युक्त दृष्टिगोचर होता है। अशोक सेकसरिया जैसे महान आदमी से प्रेरणा लेकर साहित्य अध्ययन और सृजन को बरकरार रखते हुए अलका जी ने कुछ महत्त्वपूर्ण रचनाओं का निर्माण किया है जिसके कारण उन्हें अनेक पुरस्कारों से सम्मानित किया है।

5. निष्कर्षत: कहना सही होगा कि उनका जीवन फलक तथा उनका व्यक्तित्व उनके साहित्य को समझने में तथा उचित मूल्यांकन करने में सहायक सिद्ध होता है। अंतत: कहना सही होगा कि अलका सरावगी का व्यक्तित्व एवं कृतित्व बहुमुखी है। साथ ही समाज के लिए आदर्श तो है ही लेकिन प्रेरणादायी भी है इसमें संदेह नहीं।

* * * *